सिर्फ एक कप चाय

a short story by
Monte Pradhan

यादों की मिठास और अधूरी चाहतों की तलखी,
सिर्फ एक कप चाय में घुली हुई...

सिर्फ एक कप चाय

(A SHORT STORY BY MONTE PRADHAN)

Copyright © 2025 Monte Pradhan
All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form without the prior written permission of the author.

ASIN: B0F3VR15XV

चाँद और ख़्वाब

मैं शाम में बैठा, ग़म की चादर ओढ़े,
जैसे पतझड़ में सूखे पत्ते, बिखरे होंगे।

तकिए के नीचे, ख्वाबों की लकीरें हैं,
जैसे बारिश में बहे आंसू, खामोश छिपे होंगे।

चाँद को देखता हूँ, तन्हा सा मैं,
अब वो चाँद सी नहीं, बस एक साया रह गई।

सितारों की बातें, जैसे हवा में गूंजती हैं,
टूटे दिल की धड़कनें, जैसे सर्द रातों में तन्हाई हैं।

उदासी की परछाइयाँ, बादलों सी घेर ली हैं,
अब हर ख़्वाब में बस, उसकी कमी ढूँढता हूँ।

फूलों की खुशबू अब, देवदार की तरह फीकी है,
जैसे बिछड़ने पर, हर जगह खाली सी लगती है।

- Monte Pradhan

CONTENTS

भूमिका 04

कहानी: सिर्फ़ एक कप चाय 05

अंतिम पंक्तियाँ 15

लेखक परिचय 16

भूमिका

कुछ मुलाक़ातें मुकम्मल नहीं होतीं,
कुछ रिश्तों को कभी ज़ुबान नहीं मिलती,
और कुछ लम्हे...
बस एक कप चाय में घुलकर रह जाते हैं —
बिना बोले, बिना खत्म हुए।
"सिर्फ एक कप चाय" एक ऐसी ही कहानी है —
उन अधूरी चाहतों की, जो वक़्त के साथ फीकी नहीं पड़तीं,
बल्कि हर गुज़रते मौसम के साथ और भी गहराती जाती हैं।
यह कहानी है इंतज़ार की, एहसास की,
और उस एक कप चाय की...
जिसमें न जाने कितनी यादें उबल रही होती हैं।

सिर्फ एक कप चाय

मैं, केशव सिंह 'राही', दिल्ली से श्रीनगर में IAS के नए पद पर प्रोमोट होकर आया हूँ। मेरा गाँव चमोली है, जिसे मैं सत्रह साल की उम्र में पढ़ाई के लिए छोड़ आया था। संगीत का मुझे बेहद शौक है, और इसीलिए मेरे घर में अक्सर रेडियो चलता रहता है। अजीब संयोग है कि रेडियो हमेशा वही गाने बजाता है, जो मेरी मनःस्थिति से मेल खाते हैं।

आज मैं अपने सरकारी आवास के बगीचे में चार दोस्तों के साथ बैठा हूँ। टेबल पर सरकारी फाइलें बंद रखी हैं, और मेरे हाथ में सिगार है। मेरा दोस्त बिष्णु, जो यहाँ कश्मीर में कमांडर है, कहता है—

"केशव, तू सही वक़्त पर आया है। बस कुछ दिनों में बर्फबारी शुरू होने वाली है।"
मैं मुस्कुराकर जवाब देता हूँ—
"हाँ, काफ़ी साल हो गए बर्फ गिरते देखे हुए..."
बिष्णु हँसकर कहता है—
"ज़रूर कोई ख़ास दिन होगा, जब बर्फ गिरते देखेगा।"
हम सब हँस पड़ते हैं। मेरे PA राघवनंद, जो उम्र में मुझसे बड़े हैं, गंभीरता से पूछते हैं—
"सर, आप तो भारत के किसी भी ज़िले में पोस्टिंग ले सकते थे, फिर श्रीनगर ही क्यों?"
मैं हल्की मुस्कान के साथ जवाब देता हूँ—
"वक़्त आने दो, राघव जी, सब समझ जाओगे..."

तभी रेडियो पर ग़ज़ल बजने लगती है—
"आवाज़ दे रही है मेरी ज़िंदगी मुझे..."
और ठीक उसी पल चौकीदार मेरे कान में एक नाम फुसफुसाता है—
"राधिका बिष्ट"
नाम सुनते ही मैं जैसे जड़ हो जाता हूँ। कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पाता। बस कुर्सी पीछे खींचकर दरवाज़े की ओर बढ़ जाता हूँ।
दरवाज़े के पार एक औरत खड़ी है—उम्र कोई तिरालीस के आसपास।
उसके चेहरे पर एक नक़ली मुस्कान है, लेकिन आँखें... आँखें सूनी हैं।
मैंने उसकी आँखों में कभी चंचलता देखी थी, अब वहाँ बस थकान और उदासी है।

कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊ तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद

आवाज़ दे रही है मेरी ज़िन्दगी मुझे
जाऊ मैं या न जाऊ तुझे देखने के बाद
अब क्या ग़ज़ल सुनाऊ तुझे देखने के बाद
कैसे सुकून पाऊँ, तुझे देखने के बाद

काबे का एहतराम भी मेरी नज़र में हैं
सर किस तरफ झुकाऊँ, तुझे देखने के बाद

सिर्फ एक कप चाय

वो राधिका थी—
 मेरी बचपन की दोस्त।

26 साल बाद की मुलाक़ात।

"कैसे हो, केशव?" उसने औपचारिकता से पूछा।

मैं भी एक झूठी मुस्कान देकर बोला—
 "राधिका! तुम यहाँ? बहुत साल हो गए... तुम्हें देखकर बहुत से सवाल मन में उठ रहे हैं।"

राधिका ने मेरी बात को टालते हुए एक लिफ़ाफ़ा मेरी ओर बढ़ाया।
"केशव, मेरे पति पिछले कई महीनों से सस्पेंड हैं। कुछ दस्तावेज़ों की दिक़्क़त है। अगर तुम चाहो तो ये काम जल्दी हो सकता है। क्या तुम मदद कर सकते हो?"

मैंने चुपचाप लिफ़ाफ़ा ले लिया और बस इतना कहा— "ठीक है।"

वो बिना कुछ और कहे दरवाज़े की ओर मुड़ गई।
मैं वहीं खड़ा रहा... जैसे किसी ने मुझसे बिना शब्दों के कोई कविता लिखवा ली हो।
उस रात मैं सो नहीं पाया। मैं बार-बार यही सोचता रहा—
"क्या मैं सिर्फ़ इसलिए इस शहर में आया था?"

***

सुबह होते ही मैंने ड्राइवर को बुलाया, एम्बेसडर में बैठा और दफ़्तर के लिए निकल पड़ा।

ड्राइवर ने गाड़ी एक मिठाई की दुकान के सामने रोकी—
 "साहब, आज पहला दिन है, मिठाई ले लीजिए, स्टाफ के लिए।"
मैंने सिर हिलाया और अख़बार खोल लिया।

जब गाड़ी रुकी, मैंने देखा—
 एक स्कूल की छुट्टी हो रही थी।
 बच्चे हँसते-कूदते बाहर आ रहे थे।

और तभी...
भीड़ में मुझे राधिका दिख गई।

वो अपनी बेटी को लेने आई थी—

एक मासूम-सी लड़की, जो बिल्कुल उसकी जैसी दिखती थी।

राधिका की आँखों में वही चिंता की लकीरें थीं।

मैं दूर खड़ा उसे देखता रहा, लेकिन शायद वह अपनी जिम्मेदारियों के कारण मुझे नहीं देख पाई। पहले दिन दफ़्तर में सबने मुझे बधाइयाँ दीं, मिठाइयाँ खिलाईं, लेकिन मेरा मन वहाँ नहीं था।

शाम को घर लौटकर उस रात मैं देर तक सो नहीं पाया। बारिश की बूंदें बालकनी की रेलिंग से टकरा रही थीं। हवा ठंडी थी, लेकिन मेरे भीतर की बेचैनी उससे भी ठंडी थी।

वो आदत सी बन गई है – एक कप चाय की तरह,
जिसे हर बार छोड़ना चाहा... पर छोड़ा भी तो क्या?
वो भीगे मौसम, अधूरी सी बातों की बारिश,
हर घूँट में कुछ रह गया... जो कहा भी, तो क्या?
वक़्त थम गया था, जब वो करीब आई थी,
दिल बोला बहुत कुछ... मगर लब हिले भी तो क्या?
इत्तेफ़ाक़न मिलकर भी, फासले क्यों रहे,
आँखों में सवाल थे, लब खामोश रहे...

मैंने धीरे-धीरे अपना शॉल कंधों पर डाला, एक पैग व्हिस्की बनाया और अपने सामने रखा पन्ना और पेन उठाया।

मैं राधिका को एक ख़त लिखने जा रहा था।

और लिखने से पहले सोचने लगा—

"जीवन में प्रेम का रिश्ता चाय और शराब दोनों से है। चाय प्रेम को ताजगी और उत्सुकता देती है, जबकि शराब प्रेम में सुकून और तड़प घोल देती है। तड़प से उत्पन्न होती है चाहत, और चाहत अगर अधूरी रह जाए, तो फिर आदमी सुकून ढूंढता है—जो कभी नहीं मिलता।"

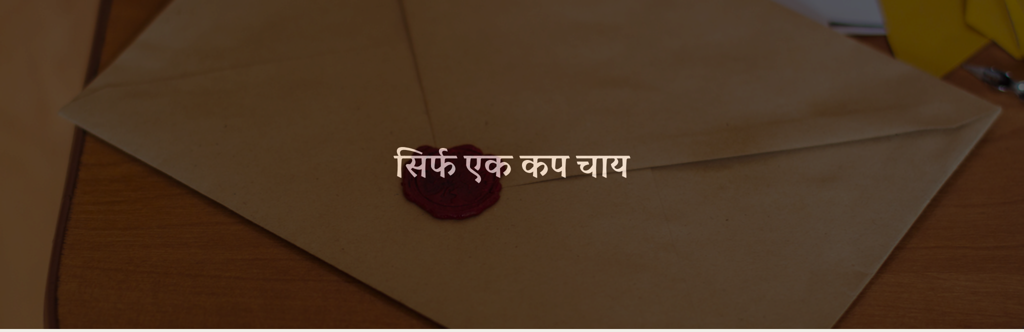

सिर्फ एक कप चाय

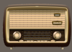

हमको किसके ग़म ने मारा, ये कहानी फिर सही
किसने तोड़ा दिल हमारा, ये कहानी फिर सही

दिल के लूटने का सबब पूछो न सबके सामने
नाम आएगा तुम्हारा, ये कहानी फिर सही

नफरतों के तीर खा कर, दोस्तों के शहर में
हमने किस किस को पुकारा, ये कहानी फिर सही

रेडियो पर ग़ुलाम अली की आवाज़ गूंज रही थी—

"नफ़रतों के तीर खा कर दोस्तों के शहर में
हम ने किस-किस को पुकारा, ये कहानी फिर सही..."

मैं चुपचाप उठा, एक पल के लिए महसूस किया, फिर आगे बढ़कर तुरंत रेडियो बंद कर दिया।

"राधिका,

तुम्हारे पति की फ़ाइल जल्द ही क्लीयर हो जाएगी।
पर ये ख़त सिर्फ़ इसी बारे में नहीं है।
कई साल बाद तुमसे मिला, तो पुरानी यादें ताज़ा हो गईं।
अगर तुम चाहो, तो क्या मुझसे एक कप चाय पीने आ सकती हो?

तुम्हारा दोस्त,
केशव।"

***

ख़त भिजवाने के बाद मैं बेचैन था।

"क्या मैंने ग़लती कर दी?"
"क्या वो सोचेगी कि मैंने ये मदद के बदले माँगा है?"

दो दिन बीत गए।
कोई जवाब नहीं आया।

सिर्फ एक कप चाय

फिर तीसरे दिन चौकीदार मेरे पास एक ख़त लाया।

"केशव, मैं कल तीन बजे आ सकती हूँ। अगर तुम्हें कोई दिक्कत न हो तो..."

मैंने चौकीदार के सामने अपना उत्साह नहीं दिखाया, लेकिन मन अंदर से बेहद ख़ुश था।

मुझे पता था, वो ज़रूर आएगी...
मेरे लिए नहीं, तो उस महफ़िल के लिए ही सही,
जिसकी उसे कभी आदत थी,
जहाँ चाय की महक और ग़ज़लों की धुन
उसके क़दमों को रोक लिया करती थी
वो जगह, जहाँ दीवारें भी उसकी चुप्पी को सुनती थीं,
जहाँ हर कोना उसका इंतज़ार किया करता था।
शायद उसे अब भी याद हो...
वो अधूरी बातें, वो हँसी की ख़ामोशियाँ,
और वो एक कप चाय –
जिसमें हम दोनों ने कभी एक-दूसरे को घोल दिया था।

***

मैंने सभी नौकरों को घर से छुट्टी पर भेज दिया था।

मैं नहीं चाहता था कोई मुझे उसके साथ देखे या उसे मेरे साथ।

मुझे खुद भी नहीं पता था कि मैं जल्दी आकर क्या करूंगा...
पर फिर भी, मैं जल्द आ गया।

अब घर में इंतज़ार नहीं हो रहा था।

मैं कमरे में बेचैनी से टहलने लगा।

घड़ी की सुइयाँ जैसे रुक-सी गई थीं।

हर गुज़रते मिनट के साथ बेसब्री बढ़ती जा रही थी।

मैंने खिड़की से बाहर झाँका—बारिश हल्की हो चली थी, हवा में ठंडक थी। एक धुंधली-सी उम्मीद मेरे भीतर कुलबुला रही थी।

सिर्फ एक कप चाय

मैंने रेडियो चालू कर दिया, शायद कोई पुराना गीत मेरी बेचैनी को आवाज़ दे सके। तभी लता जी की आवाज़ बहने लगी—

"लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो..."

मैं मुस्कुराया, मगर वो मुस्कान भी जैसे यादों की गिरफ़्त में थी। मुझे यकीन था कि राधिका ज़रूर आएगी। वो नहीं भी आई, तो क्या? ये इंतज़ार, ये बेचैनी, ये लम्हे ही तो मेरे अपने थे।

फिर मैंने घड़ी देखी—तीन बजकर सोलह मिनट। और ठीक उसी पल, मैंने उसे दरवाज़े के उस पार आते देखा...

लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो
शायद फिर इस जनम में मुलाक़ात हो न हो
लग जा गले से ...

हमको मिली हैं आज, ये घड़ियाँ नसीब से
जी भर के देख लीजिये हमको क़रीब से
फिर आपके नसीब में ये बात हो न हो
फिर इस जनम में मुलाक़ात हो न हो
लग जा गले कि फिर ये हसीं रात हो न हो

हल्के नीले रंग की साड़ी, गहरे महेरुन शॉल में लिपटी हुई।
उसकी आँखों में हल्का काजल और हल्की-सी मुस्कान...

वह दरवाजे के पास आई। मैंने दरवाजा खोला, और वह अंदर आ गई। दरवाजा बंद करते हुए मैंने उसकी ओर इशारा किया और कहा, "आइए, अंदर चलते हैं।" चलते हुए मैंने उससे पूछा, "तुम कैसी हो, राधिका?"

वह मुस्कुराई, लेकिन इस बार उसकी मुस्कान सच्ची थी—जैसे वो अंदर से खुश हो। मुझे लगा, शायद उसकी इस खुशी की वजह मैं हूँ... या फिर हमारा मिलना? पहले तो मैं सोच रहा था कि शायद मैं ही जबरदस्ती इस मुलाकात को ख़ुशी का नाम दे रहा हूँ, लेकिन उसे देखकर लगा कि वो भी कहीं न कहीं इस पल से खुश है... मेरी वजह से।

हमने कुछ सामान्य बातें कीं—उसके घर में कौन-कौन है, मैंने अब तक क्या किया, मेरा काम कैसा चल रहा है... वही सब जो आमतौर पर दो पुराने दोस्त वर्षों बाद मिलने पर करते हैं। लगभग 15-20 मिनट तक हम इन्हीं बातों में उलझे रहे। फिर मैंने कहा, "क्या हम ऊपर चलकर बैठें?"

उसने हल्का-सा सिर उठाया, आँखें बड़ी करते हुए उत्सुकता से कहा, "हाँ, ऊपर चलते हैं। मुझे तुम्हारा घर भी देखना है।"

अब तक हम खड़े-खड़े ही बात कर रहे थे। मैं उसे ऊपर ले आया और धीरे-धीरे उसे अपना घर दिखाने लगा।

हम बैठक कक्ष में आए। उसने वहाँ रखी मेरी किताबों की अलमारी पर नज़र डाली। वह रुचि से उन्हें देखने लगी—ऊपर से नीचे तक, एक-एक किताब के नाम पढ़ती हुई। कभी लेखक का नाम देखती, कभी जिल्द को छूकर महसूस करती।

मैं उसके ठीक पीछे खड़ा था। मेरी नज़र भी उसकी आँखों की हरकतों पर थी। तभी मेरी निगाह एक खास किताब पर पड़ी—"BELOVED", जो एक अंग्रेज़ी उपन्यास था। मैंने किताब लेने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन उसकी ज़ुल्फ़ों के करीब से गुज़रते हुए, वह अचानक घबराकर मुड़ी... और मेरा चेहरा उसके चेहरे के बेहद करीब आ गया।

वो हल्का-सा झिझक गई। कुछ पलों के लिए हमारी साँसें जैसे आपस में उलझ गईं। उसने तुरंत नज़रें झुका लीं और टेबल पर रखी एक किताब पर गई—"परिणीता"

उसने किताब खोली। उसके अंदर एक मुरझाया हुआ लिली का फूल रखा था।
"यह फूल?" उसने पूछा।

उसने आसानी से उस पल को टाल दिया और किताब की बात छेड़ दी।

मैंने हल्की मुस्कान के साथ कहा, "मैं हर किताब को एक फूल की उम्र के साथ पढ़ता हूँ। जब तक वो फूल मर न जाए, तब तक मुझे किताब ख़त्म करनी होती है।"

राधिका चुपचाप मेरी बात सुन रही थी, जैसे उसने भी इस अहसास को कहीं न कहीं महसूस किया हो।

तभी अचानक से बारिश तेज़ हो गई। खिड़की के काँच पर पानी की बूँदें तेज़ी से गिरने लगीं। हवा में ठंडक बढ़ गई।

मैंने हिचकिचाते हुए कहा, "वैसे, मैं प्रेम-कथाएँ ज़्यादा नहीं पढ़ता... इसलिए 'परिणीता' भी देर से शुरू की।"

राधिका ने हल्की-सी मुस्कान के साथ मेरी ओर देखा, मगर कुछ कहा नहीं। बस, बाहर हो रही बारिश को देखने लगी।

तभी रेडियो पर गाना बज उठा—
"वो नहीं मेरा मगर, वो नहीं मेरा मगर, उससे मुहब्बत है तो है..."

वो नहीं मेरा मगर उस से मोहब्बत है तो है
ये अगर रस्मों रिवाजों से बग़ावत है तो है

सच को मैं ने सच कहा जब कह दिया तो कह दिया
अब ज़माने की नज़र में ये हिमाक़त है तो है

कब कहा मैं ने कि वो मिल जाए मुझ को मैं उसे
ग़ैर ना हो जाए वो बस इतनी हसरत है तो है

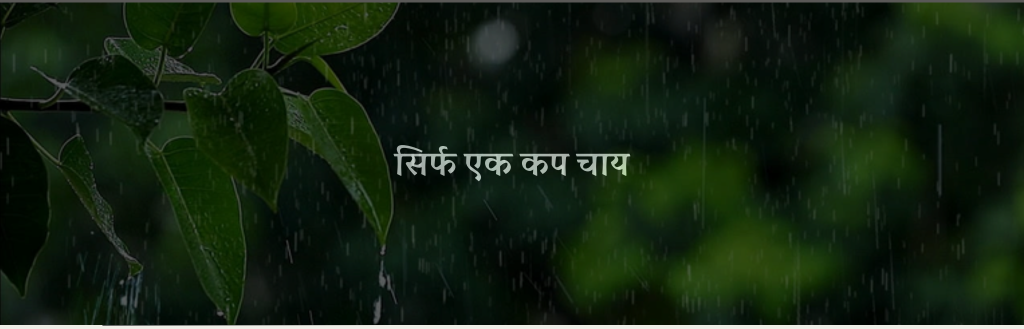

हम दोनों चुप हो गए।

कुछ लम्हों के लिए बस बारिश की आवाज़ थी।

मुझे नही पता था कि वो तब से चल रहे रेडियो को नोटिस भी कर रही थी या नहीं। उसने रेडियो को लेकर मुझसे कोई बात नहीं की, न ही उस पर कोई प्रतिक्रिया दी।

मैंने हँसते हुए कहा—
"मैं चाय बनाकर लाता हूँ। हमारा चाय से पुराना रिश्ता है, है ना? तुम बालकनी में बैठकर इंतज़ार करो, सिर्फ़ पाँच मिनट।"

उसने हँसते हुए पूछा, "तुम चाय बनाओगे?"

मुझे समझ आ गया कि उसे लग रहा होगा कि मैं क्या ही चाय बनाऊँगा—वो भी अच्छी! आखिर, मैं तो इतने सालों से सरकारी नौकरों के हाथ की चाय पीता आ रहा हूँ।

मैं मुस्कुराया और रसोई की तरफ़ बढ़ गया।

मैंने चाय में थोड़ा अदरक और इलायची डाली। ट्रे में चाय के साथ चार बिस्किट सजाए और बालकनी की ओर बढ़ा, जहाँ राधिका मेरा इंतज़ार कर रही थी।

वो बालकनी में बैठी बारिश देख रही थी।

जैसे ही मैंने ट्रे टेबल पर रखी, राधिका ने गंभीरता से मेरी ओर देखा और पूछा, "तुम सिगरेट पीते हो?"
मैं हल्का-सा मुस्कुराया और जवाब दिया, "कभी-कभी। आज अच्छा दिन है—अच्छी चाय है और साथ में तुम। तो सिगरेट को अधूरा कैसे छोड़ दूँ, HMM...?"

उसने हल्की मुस्कान के साथ सिर हिलाया और पूछा, "फिर तो आप शराब भी पीते होंगे?"
मैंने बिना पलक झपकाए कहा, "बिल्कुल नहीं।" जबकि मैं पीता था।

वो शरारती अंदाज़ में हँसी और बोली, "फिर आपके लिविंग रूम में वो शराब की बोतलें किसके लिए हैं?"

मैंने बिना झिझके जवाब दिया, "वो सब मेहमानों के लिए हैं। अक्सर मेरे दोस्त और सहकर्मी शराब पीते हैं, तो उनके लिए रखनी पड़ती है। कश्मीर में आकर कोई शराब न पीए, ऐसा हो सकता है? लेकिन हाँ, मैं नहीं पीता।"

इस बार वो ज़ोर से हँसी, मगर लिहाज़ में।

शायद इस बार वो दिल खोलकर हँसी थी। मुझे अच्छा लगा, जैसे मैं और वो 26 साल पहले पहुँच गए हों—वही बेफिक्री, वही मासूमियत। लेकिन तभी माहौल में अचानक ख़ामोशी छा गई।

शायद वो जानती थी कि इसकी वजह क्या थी... शायद मैं भी।

चाय की गर्म भाप हमारे बीच ठंडी खामोशी को तोड़ रही थी।

मुझे उससे कुछ पूछना था, लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी। मेरे दिमाग में कई सवाल घूम रहे थे, लेकिन लफ़्ज़ जैसे होंठों तक आकर रुक जाते थे। मैं सोचता रहा...

मैं चुपचाप खड़ा हुआ, बालकनी की रेलिंग पकड़ी और सामने बारिश में भीगे पेड़ों को देखने लगा। कुछ देर की ख़ामोशी के बाद, बिना उसकी ओर देखे ही धीरे से उससे पूछा—
"तुम्हारा रिश्ता... ठीक चल रहा है, तुम्हारे पति के साथ?"

वह कुछ पल के लिए ठिठकी, फिर हल्की-सी मुस्कान के साथ बस "हाँ" कहा।
यह "हाँ" एक सर्द झोंके की तरह मेरे भीतर उतर गई। मैंने हल्का-सा सिर झुका दिया और चाय खत्म करने लगा।

बारिश थम चुकी थी। उसने कुर्सी से उठते हुए कहा—
"केशव, चाय खत्म हो चुकी है। अब मुझे जाना चाहिए... घर पर सब इंतज़ार कर रहे होंगे।"

मैं उसे रोकना चाहता था। बस उसका हाथ पकड़ना चाहता था।
लेकिन... मैंने सिर्फ़ दरवाज़े की ओर इशारा कर दिया।

सिर्फ एक कप चाय

जैसे ही वह दरवाज़े के बाहर निकली, रेडियो पर मेंहदी हसन की आवाज़ गूंज उठी—

शायद इसे सुनकर एक सुकून का एहसास हुआ, जैसे किसी अनकहे सच की पुष्टि हो गई हो। अब तो यकीन सा होने लगा था कि रेडियो पर बजने वाले गाने मेरे मन की हलचल को ही आवाज़ देते हैं।

"अगर तू इत्तेफ़ाक़न मिल भी जाए, तेरी फ़ुर्क़त के सदमे कम ना होंगे..."

मैंने उसकी ओर देखा, उसने पलटकर मुझे देखा और हल्की मुस्कान के साथ बस इतना कहा—

"केशव, यह हमारी आख़िरी चाय नहीं होगी।"

To Be Continue in फिर एक कप चाय....

मोहब्बत करने वाले कम न होंगे
तिरी महफ़िल में लेकिन हम न होंगे

ज़माने भर के ग़म या इक तिरा ग़म
ये ग़म होगा तो कितने ग़म न होंगे

अगर तू इत्तिफ़ाक़न मिल भी जाए
तिरी फ़ुर्क़त के सदमे कम न होंगे

अंतिम पंक्तियाँ

“

वक़्त की तह में कुछ पल ऐसे भी छिप जाते हैं,
जो कहे बिना भी बहुत कुछ कह जाते हैं।
नज़रों की भाषा, मौन की जुबां बन जाती है,
और चाय की एक प्याली, एक कथा सुना जाती है।
ना वो मिलन पूर्ण था, ना ही विरह संपूर्ण जुदा,
कुछ रिश्ते बस ठहर जाते हैं वहीं, जहाँ अधूरी बात रही सदा।
एक हल्की मुस्कान, एक भारी चुप्पी,
और दिल में दबे कई अनकहे प्रश्न —
न कोई शिकायत, न कोई उत्तर की आस,
बस स्मृतियों में रह जाए वो मुलाक़ात का अहसास।
यादों की मिठास और अधूरी चाहतों की कसक,
बस एक कप चाय में घुली हर हल्की-सी चुस्क...

लेखक परिचय

मेरा नाम MONTE PRADHAN है।

मेरी पहली किताब "RAKTIKA - THE SWORD OF GALLANT"थी, जो एक काल्पनिक इतिहास पर आधारित थी।

"सिर्फ़ एक कप चाय" मेरे दिल के बेहद क़रीब है। इस कहानी की शुरुआत मैंने 2023 में की थी, लेकिन इसे पूरा करने में समय लगा क्योंकि मैं इसमें सिर्फ़ कहानी नहीं, एहसास भी बुनना चाहता था। शब्द मेरे लिए सिर्फ़ माध्यम नहीं हैं, बल्कि हर भाव का वजन हैं।

अगर आपको ये कहानी पसंद आई हो, या आप कुछ कहना चाहते हों — तो मुझे ज़रूर लिखें। मैं हर भावना को पढ़ना चाहता हूँ, हर अनुभव को समझना चाहता हूँ।

Email: montepradhan@gmail.com

Instagram: @montepradhan

NOTE: CLICK ON THE SONG TITLE TO LISTEN WHILE YOU READ. 🎵